अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महातपस्वी के श्रीमुख से तपस्या का बखान सुन निहाल मयिलाडुतुरैवासी

-सर्पाकार मार्ग पर लगभग बारह किलोमीटर का आचार्यश्री ने किया विहार

-अपने आराध्य के स्वागत को उमड़े मयिलाडुतुरैवासी, वगैरा चैरिटि वेडिंग हाॅल में पड़े पूज्यचरण

-तपस्या के द्वारा आत्मा को कर्मों के आवरण से मुक्त बनाने का हो प्रयासः आचार्यश्री

-धर्मपुरम आदिनम मठ के मठाधीश के उत्तराधिकारी पहुंचे पूज्य सन्निधि में

08.01.2019 मयिलाडुतुरै, नागापत्तिनम (तमिलनाडु): आदमी के जीवन में तपस्या का महत्त्व है। प्राचीनकाल में कितने-कितने साधु-संतों ने तप तपा। वर्तमान समय में भी कितने साधु अथवा गृहस्थ तपस्या में रत प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य की आत्मा कर्मों के आवरण से आवृत है। कर्मों के आवरण से आत्मा को मुक्त करने तथा आत्मा के पूर्ण स्वरूप को निखारने का साधन है तपस्या। आदमी को कर्म रूपी मैल को हटा आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त अमृत देषणा मंगलवार को तमिलनाडु राज्य के नागापत्तिनम् जिले के मयिलाडुतुरै नगर स्थित अनबनाथपुरम वगैरा चैरिटि वेडिंग हाॅल में उपस्थित सैंकड़ों श्रद्धालुओं को अहिंसा यात्रा के प्रणेता, शांतिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रदान की। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीमुख से तपस्या का बखान श्रवण कर मयिलाडुतुरै का जन-जन का मन हर्षित था, आध्यात्मिक भावों से भरा हुआ नजर आ था।

इसके पूर्व मंगलवार को प्रातः आचार्यश्री वैथिश्वरन कोईल स्थित इन्द्रा भवन से मंगल प्रस्थान किया। आज का विहार लगभग बारह किलोमीटर का था। आज का विहार मार्ग सर्पाकार था। ग्रामीणों क्षेत्रों को जोड़ने वाला यह मार्ग प्रत्येक कुछ मीटर के बाद घुमाव को प्राप्त हो रहा था। मार्ग के दोनों किनारे खेतों में धान की फसलें लगी हुई थीं। हवाओं के साथ झूमती धान की बालियां मानों आध्यात्म जगत के पुरोधा शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिनन्दन कर रही थीं। आचार्यश्री लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर मलियाडुतुरै नगर में पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने आचार्यश्री का भावपूर्ण अभिनन्दन किया। आचार्यश्री नगर स्थित अनबनाथपुरम वगैरा चैरिटि वेडिंग हाॅल के परिसर में पधारे।

परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को जीवन में सहन करने और कुछ प्राप्त करने के लिए कुछ सुविधाओं का त्याग करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आने वाली प्रतिकूलताओं को भी झेलने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने तपस्या के भेद को उजागर करते हुए कहा कि मन, वचन और काया की शुभ प्रवृत्ति ही तपस्या होती है। यह शरीर अनित्य है, धन भी शाश्वत नहीं है तो आदमी को धन और शरीर का नहीं, बल्कि धर्म का संचय करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी के आगे की गति में धर्म साथ जा सकता है। नवकारसी, पोरसी, प्रहर, उपवास, बेला, तेला आदि अनेक रूपों में अनाहर की तपस्या की जा सकती है। स्वाध्याय को भी तपस्या कहा गया है। आदमी को कुछ समय स्वाध्याय में भी लगाने का प्रयास करना चाहिए। 24 घंटे में से कुछ समय साधना के लिए निकालें। तपस्या से आत्मा का परिशोधन होता है और आदमी को तपस्या के द्वारा आत्मा के परिशोधन/शुद्धिकरण का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन प्रारम्भ करने से पूर्व सम्यक्त्व दीक्षा (गुरुधारणा) और प्रवचन पश्चात् अहिंसा यात्रा के संकल्प लोगों को स्वीकार कराए। इसके उपरान्त आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में इस क्षेत्र के प्रसिद्ध मठ धर्मपुरम आदिनम के वर्तमान मठाधीश के उत्तराधिकारी श्री मासिलामणि देसिगर, स्वामीनाथ शिवाचार्य उपस्थित हुए। आचार्यश्री वंदन करने के पश्चात् मठाधीश के उत्तराधिकारी श्री मासिलामणि देसिगर ने आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी। वहीं श्री स्वामीनाथ शिवाचार्य ने संस्कृत भाषा में आचार्यश्री की अभ्यर्थना की तथा अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उन्हें जैन धर्म और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करने के साथ पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जितना हो सके धर्म और आध्यात्म का प्रसार करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

आचार्यश्री के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष श्री श्रीचंद छल्लाणी, श्रीमती वसंता छल्लाणी व श्री अगरचंद चोरड़िया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, मूर्तिपूजक जैन संघ के सुमति मंडल ने गीतों का संगान किया। श्री एस.एस.जैन संघ की ओर श्री मनोज बोहरा ने कवितापाठ के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की।